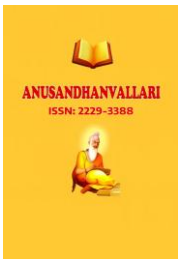

Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
January 2025
ISSN 2229-3388

छत्तीसगढ़ के रायपुर संभाग में चिकित्सा वैज्ञानिकों के बीच शोध गतिविधियों को समर्थन देने में चिकित्सा महाविद्यालय पुस्तकालयों की भूमिका का अन्वेषण

अमृत कुमार पोर्ते

रिसर्च स्कॉलर, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान, मैट्स विवि, रायपुर छग

डॉ. कल्पना चंद्राकर

शोध निर्देशक, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान, मैट्स विवि, रायपुर छग

सारांश

यह शोध पत्र छत्तीसगढ़ के रायपुर संभाग में चिकित्सा वैज्ञानिकों के बीच शोध गतिविधियों को बढ़ावा देने और बनाए रखने में चिकित्सा महाविद्यालय पुस्तकालयों की महत्वपूर्ण भूमिका की जांच करती है। उपलब्ध संस्थागत डेटा और अकादमिक साहित्य की व्यापक समीक्षा को स्पष्ट करते हुए, अध्ययन इन पुस्तकालयों द्वारा प्रदान की जाने वाली आवश्यक सेवाओं को रेखांकित करता है, चिकित्सा शोधकर्ताओं द्वारा सामना की जाने वाली विशिष्ट सूचना आवश्यकताओं और चुनौतियों की पहचान करता है, और वैज्ञानिक परिणाम और स्वास्थ्य सेवा परिणामों पर पुस्तकालय समर्थन के व्यापक प्रभाव को स्पष्ट करता है। मुख्य निष्कर्ष संभाग के अंतर्गत संस्थानों में डिजिटल बुनियादी ढांचे और विशेष शोध सहायता में महत्वपूर्ण असमानता को प्रकट करते हैं, साथ ही शोध अखंडता और उन्नत डिजिटल उपकरणों के एकीकरण पर जोर देता है। पत्र पुस्तकालय संसाधनों को मानकीकृत करने, विशेष सहायता को बढ़ाने और क्षेत्र में समग्र शोध पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के उद्देश्य से सूक्ष्म टिप्पणियों और किये जाने योग्य सिफारिशों पर जोर देता है।

कुंजी शब्द– चिकित्सा महाविद्यालय, चिकित्सा वैज्ञानिक, संसाधन, स्वास्थ्य।

भूमिका

चिकित्सा शोध वैश्विक स्वास्थ्य सेवा की उन्नति के लिए एक अपरिहार्य स्तंभ के रूप में खड़ा है। यह नवाचार को आगे बढ़ाने, रोगी के परिणामों में सुधार करने और जीवन रक्षक उपचारों के विकास को सुविधाजनक बनाने के लिए प्राथमिक इंजन के रूप में कार्य करता है। इस महत्वपूर्ण शोध की प्रभावशीलता और गति विश्वसनीय, साक्ष्य–आधारित जानकारी तक समय पर, सटीक और व्यापक पहुंच पर निर्भर करती है। इस आधारभूत पहुंच के बिना, अभूतपूर्व खोजों की क्षमता और वैज्ञानिक ज्ञान को व्यावहारिक नैदानिक अनुप्रयोगों में रूपांतरित करने में गंभीर बाधा उत्पन्न होगी।

चिकित्सा और शैक्षणिक पुस्तकालय आवश्यक ज्ञान केन्द्रों के रूप में कार्य करते हैं, तथा सूचनात्मक अवसंरचना और संसाधन प्रदान करते हैं जो स्वास्थ्य विज्ञान में विद्वानों की जांच को आधार प्रदान करते हैं। उनका योगदान केवल सामग्री उपलब्ध कराने तक ही सीमित नहीं है, ये पुस्तकालय साक्ष्य–आधारित चिकित्सा को सक्रिय रूप से सुगम बनाते हैं तथा स्वास्थ्य देखभाल चिकित्सकों और शोधकर्ताओं के सतत व्यावसायिक विकास में सहायता करते हैं। विभिन्न स्रोतों में लगातार संदेश प्रत्यक्ष तौर पर मजबूत सूचना तक पहुँच को सकारात्मक शोध और स्वास्थ्य परिणामों से जोड़ते हैं। उदाहरण के लिए, मेडिकल लाइब्रेरी एसोसिएशन इस बात पर जोर देता है कि **"पूर्ण, विश्वसनीय, साक्ष्य–आधारित और अद्यतन स्वास्थ्य जानकारी तक पहुँच चिकित्सा अनुसंधान को आगे बढ़ाने, रोगी देखभाल में सुधार करने और सार्वजनिक स्वास्थ्य का समर्थन करने के लिए मौलिक है"**। इसके विपरीत, इन महत्वपूर्ण संसाधनों में कमी या क्षति से **"नवाचार धीमा पड़ता है, सार्वजनिक स्वास्थ्य योजना बाधित होती है, तथा जीवन रक्षक उपचारों के विकास में बाधा उत्पन्न होती है"**। यह अवलोकन एक प्रत्यक्ष संबंध को प्रदर्शित करता हैः सुलभ सूचना की उपस्थिति और गुणवत्ता, चिकित्सा शोध और इसके मूर्त सामाजिक लाभों को प्रत्यक्ष रूप से सक्षम और तीव्र बनाती है, जबकि इसकी अनुपस्थिति या कमी स्वास्थ्य देखभाल के प्रगति में गंभीर बाधा उत्पन्न करती है।

शोध उद्देश्य–

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. चिकित्सा पुस्तकालय किस प्रकार से शोध में सहायक है।
2. चिकित्सा वैज्ञानिकों को शोध में किस प्रकार से समस्याएं होती है पता लगाना।
3. चिकित्सा वैज्ञानिकों का डिजिटल संसाधनों तक पहुंच का पता लगाना।
4. पुस्तकालय केवल भंडार संसाधन न होकर कौशल विकास में किस प्रकार से सहायक है?

साहित्यिक समीक्षा

McKeown, S., & Ross-White, A. (2019) चिकित्सा पुस्तकालयों को वैज्ञानिक शोध निर्णय लेने के लिए सूचना सहायता प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है, विशेष रूप से चिकित्सा प्रौद्योगिकी के तेजी से विकास और चिकित्सा सूचना के निरंतर अद्यतन के साथ। वे चिकित्सा और स्वास्थ्य सूचना बुनियादी ढांचे का एक अनिवार्य घटक हैं, जिन्हें भारी मात्रा में डेटा की पहचान, विश्लेषण और भंडारण का काम सौंपा गया है। शोध पत्र इन सूचना सेवाओं के भीतर वर्तमान स्थिति और मौजूदा समस्याओं पर प्रकाश डालता है। मूल्यांकन और भविष्य की दिशाएँ मामले के विश्लेषण और मूल्यांकन के माध्यम से, शोध वर्तमान अस्पताल पुस्तकालय सूचना सेवाओं की ताकत और कमजोरियों का सारांश देता है। यह इन सेवाओं में और सुधार के लिए सुझाव देकर समाप्त होता है, जिसका उद्देश्य वैज्ञानिक अनुसंधान निर्णय लेने में उनकी भूमिका को अनुकूलित करना है। समग्र लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि चिकित्सा पुस्तकालय कुशल और व्यापक सूचना सहायता प्रदान करके चिकित्सा शोध के विकास में प्रभावी रूप से योगदान दें।

Ragon, B. (2019). बार्ट रैगन द्वारा 'पुस्तकालय सेवाओं का शोध जीवनचक्र के साथ संरेखण' शीर्षक वाला यह अध्ययन, जैव चिकित्सा शोध के लिए पुस्तकालय समर्थन की वर्तमान स्थिति और शोध जीवनचक्र में जैव चिकित्सा शोधकर्ताओं की आवश्यकताओं की जांच करता है। अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि पारंपरिक पुस्तकालय सेवा मॉडल वर्तमान जैव चिकित्सा शोध आवश्यकताओं के लिए अपर्याप्त हो सकते हैं, जो पुस्तकालयों को उन सेवाओं में निवेश करने की आवश्यकता का सुझाव देता है जो प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए शोध प्रक्रिया, विशेष रूप से संचालन चरण में अधिक गहराई से एकीकृत होती हैं। निष्कर्ष में, पत्र स्वास्थ्य विज्ञान पुस्तकालयों के लिए अपनी सेवाओं को पूरे शोध जीवनचक्र के साथ बेहतर ढंग से संरेखित करने के लिए अनुकूलित करने की आवश्यकता पर जोर देता है, विशेष रूप से पारंपरिक सूचना पुनर्प्राप्ति से परे सक्रिय शोध चरण के लिए समर्थन बढ़ाकर।

Lessick, S., Perryman, and et.al. (2016). 2016 में जर्नल ऑफ द मेडिकल लाइब्रेरी एसोसिएशन में प्रकाशित यह अध्ययन स्वास्थ्य विज्ञान पुस्तकालयाध्यक्ष की शोध संलग्नता की जांच करता है, जो पहले कम खोजा गया विषय था। यह विशेष रूप से मेडिकल लाइब्रेरी एसोसिएशन (एमएलए) के सदस्यों की शोध गतिविधियों और दृष्टिकोणों की जांच करता है, उनके कार्य संबद्धता के प्रभाव पर विचार करता है। निष्कर्ष स्वास्थ्य विज्ञान पुस्तकालयाध्यक्ष के बीच उच्च स्तर के शोध संलग्नता को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए, 79% उत्तरदाताओं ने मासिक रूप से शोध लेख पढ़े, 58% ने प्रकाशित शोध को अपने अभ्यास में लागू किया, और 44% ने शोध किया था। उल्लेखनीय रूप से, 62% ने बताया कि शोध पर काम करने से उनके पुस्तकालयों में वृद्धि हुई, और 34% ने शोध लेख लिखे थे। एक महत्वपूर्ण असमानता देखी गई, जिसमें अस्पताल के पुस्तकालयाध्यक्ष अकादमिक पुस्तकालयाध्यक्ष की तुलना में शोध गतिविधियों में भाग लेने की कम संभावना रखते थे। अध्ययन में इन पेशेवरों के लिए शोध से संबंधित लाभ, बाधाओं और दक्षताओं पर भी प्रकाश डाला गया है। परिणाम बताते हैं कि स्वास्थ्य विज्ञान पुस्तकालयाध्यक्ष शोध में सक्रिय रूप से शामिल हैं, और उनकी भागीदारी अभ्यास निर्णयों और सेवा सुधारों को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है। अध्ययन में हस्तक्षेप अध्ययनों सहित भविष्य के शोध की आवश्यकता बताई गई है, ताकि क्षेत्र के भीतर शोध और लेखन उत्पादकता को और बढ़ाया जा सके।

पुस्तकालयाध्यक्ष व्यवस्थित समीक्षा गतिविधियों की बढ़ती मांग का समर्थन करने के लिए सेवा मॉडल को तेजी से परिभाषित और विकसित कर रहे हैं हालांकि, यह समर्थन अक्सर समय की कमी के कारण बाधित होता है, जिससे पुस्तकालयाध्यक्ष की प्रशिक्षण, अनुभव प्राप्त करने और समीक्षा टीमों में भाग लेने की क्षमता प्रभावित होती है पद्धतिगत

मुद्दे सहयोग की चुनौतियां भी पेश करते हैं, जिससे समीक्षाओं की गुणवत्ता प्रभावित होती है स्वास्थ्य विज्ञान पुस्तकालयाध्यक्ष, विशेष रूप से, व्यवस्थित समीक्षा समर्थन के अनुरोधों में पर्याप्त वृद्धि का अनुभव कर रहे हैं इस बढ़ती मांग के कारण कार्यभार को प्रबंधित करने और उच्च गुणवत्ता वाले शोध परिणामों को सुनिश्चित करने के लिए रणनीतिक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

शोध प्रविधि–

प्रस्तुत शोध में रायपुर संभाग के 4 चिकित्सा महाविद्यालयों को अध्ययन हेतु चयनीत किया गया हैं। डाटा संकलन के लिए एक संरचित प्रश्नावली का निर्माण किया गया। प्रत्येक चिकित्सा महाविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष को प्रश्नावली वितरित किया गया था और सभी से प्रश्नावली की प्राप्ति हुई। रायपुर संभाग के चयनीत महाविद्यालय निम्न है–

1. पं. जवाहरलाल नेहरू स्मृति चिकित्सा महाविद्यालय, (पंजनेचिम) रायपुर
2. रायपुर इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस (रिम्स) रायपुर।
3. श्री बालाजी चिकित्सा विज्ञान संस्थान (बीएमसी) –2021, रायपुर।
4. शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय (जीएमसी), महासमुंद।

चिकित्सा महाविद्यालय पुस्तकालय रायपुर संभाग, छत्तीसगढ़ – एक अवलोकन

रायपुर रणनीतिक रूप से छत्तीसगढ़ राज्य के भौगोलिक केंद्र में स्थित है। रायपुर संभाग में कई प्रमुख जिले शामिल हैं– रायपुर के साथ–साथ स्पर्श जिले धमतरी, गरियाबंद, बलौदा बाजार और महासमुंद। ''रायपुर संभाग'' और उसके घटक जिलों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना इस शोध के सटीक भौगोलिक दायरे को स्थापित करने के लिए यह मौलिक है। यह क्षेत्रीय निगरानी इस बात की बारीक जांच करने की अनुमति देता है कि चिकित्सा शिक्षा और शोध संसाधन, विशेष रूप से पुस्तकालय सेवाएँ, एक विशिष्ट प्रशासनिक क्षेत्र के भीतर कैसे वितरित और उपयोग की जाती हैं।

रायपुर संभाग में संचालित चिकित्सा संस्थान

5. पं. जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल मेडिकल कॉलेज, (पंजनेचिम) रायपुर–1963
6. अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), रायपुर– 2012 में स्थापित एम्स रायपुर।
7. शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय, महासमुंदः हाल ही में 2022 में स्थापित, यह महाविद्यालय महासमुंद जिले में स्थित है, जो स्पष्टतः रायपुर संभाग का हिस्सा है।
8. रायपुर इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस (रिम्स)–2012, रायपुर।
9. श्री बालाजी चिकित्सा महाविद्यालय संस्थान (बीएमसी) –2021, रायपुर।
10. शासकीय दंत चिकित्सा महाविद्यालय, रायपुर।

पुस्तकालय सुविधाएं और संसाधन

रायपुर संभाग में चिन्हित चिकित्सा महाविद्यालयों में केंद्रीय पुस्तकालय सुविधाएं और संसाधन विकास के विभिन्न स्तरों को प्रदर्शित करते हैं, जो उनकी संस्थागत प्राथमिकताओं को दर्शाते हैं।

पं. जवाहरलाल नेहरू स्मृति चिकित्सा महाविद्यालय, रायपुर– इसकी मुख्य सुविधाओं में से एक 'केंद्रीय पुस्तकालय' है। इसकी आधिकारिक वेबसाइट पर 'शोध प्रकाशन' लिंक भी है, जो शोध परिणाम के प्रसार पर संस्थागत जोर देने का सुझाव देता है। हालाँकि, प्रदान की गई जानकारी पुस्तकालय के डिजिटल संसाधनों, सामान्य उल्लेख से परे इसके संग्रह की सीमा, या इसके द्वारा प्रदान किए जाने वाले विशिष्ट शोध सहायता उपकरण और सेवाओं के बारे में सीमित विशिष्ट विवरण प्रदान करती है।

रायपुर चिकित्सा विज्ञान संस्थान (रिम्स)– रायपुर इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (RIMS) रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत में स्थित एक निजी मेडिकल कॉलेज है, जिसकी स्थापना 2012 में हुई थी। इसका प्रबंधन भगवान बुद्ध एजुकेशन सोसाइटी द्वारा किया जाता है और यह पं. दीनदयाल उपाध्याय मेमोरियल हेल्थ साइंसेज और आयुष यूनिवर्सिटी ऑफ छत्तीसगढ़, रायपुर से संबद्धता है।

श्री बालाजी चिकित्सा महाविद्यालय संस्थान (बीएमसी)– यह महाविद्यालय निजी क्षेत्र का प्रमुख चिकित्सा महाविद्यालय के रूप में संचालित है जहां चिकित्सा वैज्ञानिकों तैयार करने विभिन्न विधाओं में अध्ययन की सुविधा प्रदान करते हैं। इसका स्वयं का वृहद् पुस्तकालय संग्रह है जहां अध्ययन के साथ शोध हेतु प्रमुख संसाधनों की उपलब्धता इसे वैज्ञानिकों के लिए पूर्णता प्रदान करता है।

शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय, महासमुंद– इस संस्थान के पास एक केन्द्रीय पुस्तकालय है, जिसमें भौतिक पुस्तकालय में पुस्तकों की संख्या 2461 हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि यह एनएलआईएसटी सदस्यता प्राप्त है, जो 6000 से अधिक ई–पत्रिकाओं तक पहुंच प्रदान करता है, जो इसकी महत्वपूर्ण डिजिटल उपस्थिति को दर्शाता है। अन्य प्रलेखित सेवाओं में इंटर लाइब्रेरी लोन (आईएलएल), दस्तावेज वितरण सेवा (डीडीएस), रेफरल सेवाएं, वर्तमान जागरूकता सेवा, पुस्तकों का नया संकलन, ई–लाइब्रेरी सेवा और प्रतिलिपि सेवा शामिल हैं। पुस्तकालय ई–पुस्तकों, ई–पत्रिकाओं और ऑडियो–वीडियो संग्रहों तक पहुंच प्रदान करने के लिए एक समर्पित ब्लॉग का रखरखाव करता है, साथ ही राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी के लिंक भी उपलब्ध कराता है।

तालिका क्रमांक 1 – रायपुर संभाग, छत्तीसगढ़ के चिकित्सा महाविद्यालय और उनकी केंद्रीय पुस्तकालय सुविधाएं।

संसाधन संग्रह	पंजनेस्मृचिम	रीम्स	बीएमसी	जीएमसी महासमुंद
पुस्तकों की कुल संख्या	21626	11325	7308	2461
ई–पुस्तकें डाटाबेस	1	0	2781	0
पत्रिकाओं की संख्या	11642	100	75	282
ई–पत्रिकाओं की संख्या	1	0	3201	0
शोध ग्रंथों की संख्या	875	0	0	0
समाचार पत्रों की संख्या	5	3	6	0
बैठक क्षमता	400	430	300	200
कम्प्यूटर	3	72	41	25

प्राथमिक आंकडे

शोध गतिविधियों में चिकित्सा महाविद्यालय पुस्तकालयों की भूमिका

चिकित्सा महाविद्यालय के पुस्तकालय विद्वानों के संसाधनों के मूलभूत प्रदाता के रूप में काम करते हैं, जो पारंपरिक पुस्तकों, अकादमिक पत्रिकाओं, विशेष डेटाबेस और मल्टीमीडिया सामग्री सहित सामग्री की एक विस्तृत श्रृंखला तक आवश्यक पहुँच प्रदान करते हैं। ये संसाधन सभी शैक्षणिक और नैदानिक शोध प्रयासों के लिए आधारभूत आधार बनाते हैं। ई–लाइब्रेरी, ई–जर्नल, ऑनलाइन डेटाबेस, और ERMED, UpToDate, और Clinical Key जैसे विशिष्ट डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लगातार जोर देने से यह स्पष्ट रूप से पता चलता है कि डिजिटल पहुँच अब एक पूरक विशेषता नहीं है, बल्कि आधुनिक चिकित्सा शोध का एक केंद्रीय, अपरिहार्य घटक है। ऐसा इसलिए है क्योंकि डिजिटल संसाधन तेजी से खोज, दूरस्थ पहुँच और सूचना की मुद्रा के मामले में अद्वितीय लाभ प्रदान करते हैं, जो सभी चिकित्सा के तेजी से विकसित हो रहे क्षेत्र में महत्वपूर्ण हैं। इसलिए, जो पुस्तकालय रणनीतिक रूप से निवेश करते हैं और मजबूत डिजिटल सदस्यताएँ बनाए रखते हैं, वे अत्याधुनिक शोध का समर्थन करने और यह सुनिश्चित करने के लिए बेहतर स्थिति में हैं कि उनके चिकित्सा वैज्ञानिक अपने क्षेत्रों में सबसे आगे रहें।

शोध सहायता सेवाएँ

संदर्भ एवं साहित्य खोज सहायता– पुस्तकालयाध्यक्ष शोधकर्ताओं को महत्वपूर्ण विशेषज्ञ मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, जटिल सूचना परिदृश्यों को समझने, प्रासंगिक संसाधनों को कुशलतापूर्वक खोजने, तथा उनकी शोध रणनीतियों को परिष्कृत

करने में उनकी सहायता करते हैं। एम्स रायपुर ने स्पष्ट रूप से संदर्भ सेवाओं को सूचीबद्ध किया है, और जीएमसी महासमुंद में रेफरल सेवाएं का उल्लेख है। व्यापक शैक्षणिक साहित्य भी पबमेड, पुस्तकालय साइटों और अन्य डेटाबेस जैसे प्लेटफार्मों से साहित्य खोज में प्रशिक्षण के महत्व पर प्रकाश डालता है। ऐसी सेवाएं यह सुनिश्चित करती हैं कि शोधकर्ता अपने अध्ययन के लिए सर्वाधिक प्रासंगिक जानकारी को प्रभावी ढंग से पहचान सकें और प्राप्त कर सकें।

शोध पद्धति और प्रकाशन नैतिकता पर कार्यशालाएं और प्रशिक्षण– पुस्तकालय विभिन्न शोध–संबंधित विषयों पर कार्यशालाओं और प्रशिक्षण सत्रों की मेजबानी करने में तेजी से सक्रिय हैं। इनमें साहित्य खोज, उद्धरण प्रबंधन उपकरणों का प्रभावी उपयोग, शोध डेटा प्रबंधन और विद्वानों के प्रकाशन की जटिलताओं को नेविगेट करने जैसे व्यावहारिक कौशल शामिल हैं। एक सामान्य शैक्षणिक पुस्तकालय का उदाहरण अनुसंधान पद्धति, प्रकाशन नैतिकता, अनुसंधान उपकरण और विद्वत्तापूर्ण प्रकाशन में प्रस्तुतियों को दर्शाता है। इस तरह की शैक्षिक पहल चिकित्सा वैज्ञानिकों को प्रभावी और नैतिक अनुसंधान करने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान से युक्त करने के लिए महत्वपूर्ण है, जिससे उनकी समग्र शोध क्षमताओं में वृद्धि होगी।

अंतर–पुस्तकालय ऋण और प्रलेख वितरण सेवाएँ– पुस्तकालय, अंतर–पुस्तकालय ऋण (आईएलएल) सेवाओं के माध्यम से अपने तत्काल संग्रह में न रखी गई सामग्री के अधिग्रहण की सुविधा प्रदान करके शोधकर्ताओं की सूचना तक पहुंच को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाते हैं। शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय महासमुंद स्पष्ट रूप से आईएलएल और दस्तावेज वितरण सेवा (डीडीएस) दोनों प्रदान करता है, जो स्थानीय संसाधनों से परे व्यापक संसाधनों तक पहुंच के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

चिकित्सा महाविद्यालय पुस्तकालयों द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं की व्यापक श्रृंखला, जिसमें साहित्यिक चोरी का पता लगाना, उद्धरण प्रबंधन, तथा शोध पद्धति और प्रकाशन नैतिकता पर कार्यशालाएं शामिल हैं, उनकी भूमिका में एक गहन विकास को दर्शाता है। पुस्तकालय अब केवल संसाधनों तक पहुँच प्रदान करने तक ही सीमित नहीं हैं: वे शोधकर्ताओं के आवश्यक कौशल का निर्माण करने, कठोर नैतिक शोध प्रथाओं को बढ़ावा देने और वैज्ञानिक परिणाम की समग्र गुणवत्ता और अखंडता सुनिश्चित करने में सक्रिय रूप से लगे हुए हैं। यह विस्तारित कार्य उन्हें संपूर्ण शोध जीवनचक्र में अपरिहार्य भागीदार के रूप में स्थान देता है, जो प्रारंभिक सूचना पुनर्प्राप्ति चरण से कहीं आगे तक उनके प्रभाव को बढ़ाता है।

डाटा संकलन एवं विश्लेषण

प्रस्तुत शोध पत्र में उल्लेखित प्राथमिक आंकडों को प्रत्यक्ष रूप से संबंधित शोध क्षेत्र में संकलित किया गया है जिन्हें एक्सेल शीट पर प्रतिस्थापित कर आंकडों का ग्राफिक निरूपण किया गया ।

तालिका क्रमांक 2 – चिकित्सा संस्थान में पंजीकृत पुस्तकालय उपयोगकर्ता

चिकित्सा संस्थान	पंजीकृत उपयोगकर्ता	प्रतिशत
पंजनेस्मृचिम रायपुर	1535	49.36%
रिम्स	750	24.12%
बीएएमसी	450	14.47%
जीएमसी महासमुंद	375	12.05%
कुल	**3110**	**100%**

प्राथमिक आंकडे (जून 2025 की स्थिति)

तालिका क्रमांक 2 के अनुसार पंजनेस्मृतिम, रायपुर में पंजीकृत 1535 (49.36%), रिम्स में 750 (24.12%), बीएमसी में 450 (14.47%) व जीएमसी महासमुंद में 375 (12.05%) पंजीकृत उपयोकर्ता पाए गए हैं जिसमें सर्वाधिक प्रभाव पंजनेस्मृचिम रायपुर का रहा है एवं कम के मामले में जीएमसी महासमुंद रहा है।

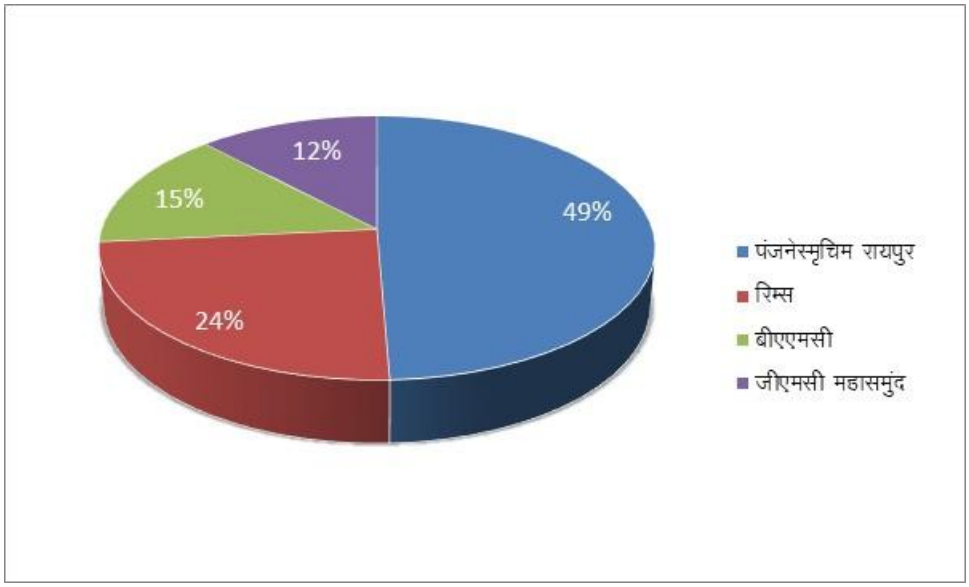

तालिका क्रमांक 3 – चिकित्सा वैज्ञानिकों के लिए उपलब्ध पुस्तकालय अनुभाग

अनुभाग	पंजनेस्मृचिम	रीम्स	बीएमसी	जीएमसी महासमुंद	कुल	प्रतिशत
अधिग्रहण	1	1	1	1	4	100%
परिचालन	1	1	1	1	4	100%
पत्रिका	1	1	1	1	4	100%
तकनीकी	1	1	1	1	4	100%
रखरखाव	1	1	1	1	4	100%
संदर्भ	1	0	0	0	1	25%

प्राथमिक आंकडे (जून 2025 की स्थिति)

(तालिका में प्रयुक्त संकेताक्षर हां 1, नहीं 0)

विश्लेषण– तालिका क्रमांक 3 में चिकित्सा वैज्ञानिकों के लिए विभिन्न चिकित्सा संस्थानों में उपलब्ध अनुभागों का विविरण जिसमें अधिग्रहण, परिचालन, पत्रिका, तकनीकी, रखरखाव एवं संदर्भ अनुभाग आदि जिसमें चयनीत सभी महाविद्यालयों में अनुभाग समान रूप से कार्य कर रहे जो चिकित्सा वैज्ञानिकों के लिए अनिवार्य है और उच्च शिक्षण संस्थानों में यह आवश्यक भी है जिससे अधिकतम चिकित्सा संसाधनों का उपयोग हो सके। संदर्भ विभाग के संबंध में केवल सेवा प्रदान की जाती है पुस्तकालय का महत्वपूर्ण अनुभाग है अन्य महाविद्यालय में इस सेवा का अभाव है।

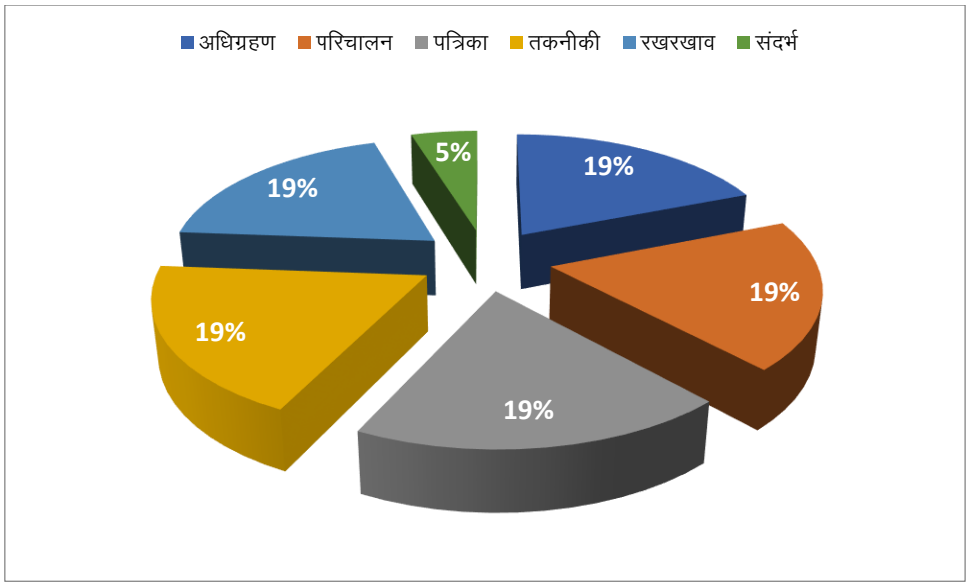

शोध में चिकित्सा वैज्ञानिकों और पुस्तकालयों के सामने आने वाली चुनौतियाँ

चिकित्सा वैज्ञानिकों, विशेषकर गहन देखभाल इकाइयों जैसे उच्च–तीव्रता वाले वातावरण में काम करने वाले वैज्ञानिकों को बहुत अधिक मात्रा और विभिन्न प्रकार के डेटा का सामना करना पड़ता है, जिसकी उच्च गति के कारण सूचना का भार बढ़ जाता है। यह घटना, जिसे सूचना अधिभार के रूप में जाना जाता है, जटिल मुद्दों को समझने और सही निर्णय लेने में कठिनाई पैदा कर सकती है। समय प्रबंधन एक और महत्वपूर्ण चुनौती प्रस्तुत करता है, चिकित्सा परामर्शदाताओं के पास अक्सर ज्ञान को निरंतर अद्यतन करने के लिए पर्याप्त समय नहीं होता है, फिर भी उन्हें देखभाल के समय सही जानकारी तक तत्काल पहुंच की आवश्यकता होती है। खराब तरीके से रचना किए गए इलेक्ट्रॉनिक स्वास्थ्य रिकॉर्ड (ईएचआर) इंटरफेस से उत्पन्न अकुशलताएं समय की कमी को और बढ़ा सकती हैं तथा स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के बीच निराशा को बढ़ा सकती हैं। इससे सुव्यवस्थित सूचना वितरण और उपयोगकर्ता–अनुकूल प्रणालियों की आवश्यकता उजागर होती है, जो सूचना प्राप्ति पर लगने वाले समय को न्यूनतम कर दें और रोगी देखभाल और शोध के लिए अधिकतम समय प्रदान करें।

नैतिक विचार सर्वोपरि हैं, जिम्मेदार और सुरक्षित डेटा प्रथाओं को सुनिश्चित करने के लिए नैतिक दिशा–निर्देशों का निरंतर पुनर्मूल्यांकन आवश्यक है। इसके अलावा, उपभोक्ता–स्तरीय उपकरणों से डेटा का उपयोग करते समय शोध विधियों और डेटा गुणवत्ता के बारे में चिंताएँ मौजूद हैं, जो अक्सर कठोर विनियामक अनुमोदन प्रक्रियाओं से नहीं गुजरते हैं, जिससे शोध डेटासेट में पूर्वाग्रह या विश्वसनीयता के मुद्दे पैदा हो सकते हैं। इसके लिए शोधकर्ताओं को आलोचनात्मक निर्णय लेने तथा पुस्तकालयों को डेटा की वैधता और विश्वसनीयता पर मार्गदर्शन प्रदान करने की आवश्यकता होती है।

तकनीकी उन्नयन डिजिटल संसाधनों और सूचना पुनर्प्राप्ति

तकनीकी प्रगति की तीव्र गति के लिए निरंतर तकनीकी उन्नयन डिजिटल संसाधनों और सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणालियों में नवाचारों के साथ तालमेल बनाए रखना। पुस्तकालयों को आधुनिक शोध को समर्थन देने में प्रासंगिक और प्रभावी बने रहने के लिए नए सॉफ्टवेयर, हार्डवेयर और नेटवर्क इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेश करना चाहिए। कॉपीराइट सीमाएँ यह कुछ डिजिटल संसाधनों की पहुंच और उपयोग को भी प्रतिबंधित कर सकता है, जिससे शोधकर्ताओं के लिए निर्बाध सूचना प्रवाह में बाधा उत्पन्न हो सकती है। अंततः, यह सुनिश्चित करना कि वह नियत दीर्घावधि में डिजिटल संसाधनों और सेवाओं का उपयोग एक गंभीर चिंता का विषय है। इसमें न केवल वित्तीय नियोजन शामिल है, बल्कि डिजिटल सामग्री को संरक्षित करने, उपयोगकर्ताओं की बदलती जरूरतों के अनुरूप बदलने और स्वास्थ्य सूचना पेशेवरों के कुशल

कार्यबल को बनाए रखने में रणनीतिक दूरदर्शिता भी शामिल है। निरंतर निवेश और रणनीतिक योजना के बिना, पुस्तकालयों को अत्याधुनिक चिकित्सा शोध के लिए आवश्यक व्यापक सहायता प्रदान करने में कठिनाई हो सकती है।

निष्कर्ष

रायपुर संभाग, छत्तीसगढ़ में चिकित्सा महाविद्यालय के पुस्तकालय, चिकित्सा वैज्ञानिकों के बीच शोध गतिविधियों का समर्थन करने में एक बहुमुखी और तेजी से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे चिकित्सा वैज्ञानिकों के संसाधन प्रदान करने, महत्वपूर्ण शोध सहायता सेवाएँ प्रदान करने और सहयोगी वातावरण को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक केंद्र के रूप में कार्य करते हैं। जिनमें पंजनेस्मृचि रायपुर काफी प्रभावी रहा है। डिजिटल परिवर्तन आधुनिक चिकित्सा शोध के लिए मौलिक है, जो वर्तमान, साक्ष्य–आधारित जानकारी तक तेजी से पहुँच को सक्षम बनाता है। इसके अलावा, पुस्तकालय केवल भंडार से आगे बढ़कर कौशल विकास और शोध अखंडता में सक्रिय भागीदार बन रहे हैं, कार्यप्रणाली और प्रकाशन नैतिकता में प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं।

चिकित्सा वैज्ञानिक सूचना के अत्यधिक बोझ, जटिल डेटा एक्सेस मुद्दों विशेषकर स्वास्थ्य और समय की कमी से जूझते हैं। बदले में, पुस्तकालयों को वित्तीय सीमाओं, तकनीकी उन्नयन की निरंतर आवश्यकता और कॉपीराइट जटिलताओं का सामना करना पड़ता है, जो सभी उनकी सेवाओं की स्थिरता को प्रभावित करते हैं। एक उल्लेखनीय अवलोकन रायपुर संभाग के भीतर चिकित्सा महाविद्यालयों में डिजिटल बुनियादी ढांचे और विशेष शोध सहायता में असमानता है, जो असमान शोध अवसरों को जन्म दे सकती है।

सुझाव

संस्थानों को संभाग के सभी चिकित्सा महाविद्यालयों में कोर मेडिकल डेटाबेस, ई–जर्नल और ई–बुक तक पहुँच को मानकीकृत करने की दिशा में सहयोगात्मक रूप से काम करना चाहिए। इसमें साझा कंसोर्टिया सदस्यता या क्षेत्रीय लाइसेंसिंग समझौतों की खोज करना शामिल हो सकता है ताकि आवश्यक संसाधनों तक समान पहुँच सुनिश्चित की जा सके, विशेष रूप से उन संस्थानों के लिए जिनके पास वर्तमान में सीमित डिजिटल उपलब्धता हैं।

पुस्तकालयों को आधुनिक चिकित्सा शोध की डेटा–गहन और अंतःविषय प्रकृति के लिए अधिक विशिष्ट सहायता शामिल करने के लिए अपनी पेशकश का विस्तार करना चाहिए। इसमें उन्नत डेटा प्रबंधन उपकरण, सांख्यिकीय विश्लेषण सॉफ्टवेयर, जैव सूचना विज्ञान प्लेटफॉर्म और व्यवस्थित समीक्षा और मेटा–विश्लेषण के लिए उपकरणों तक पहुँच और प्रशिक्षण प्रदान करना शामिल है।

सूचना के अतिभार से निपटने और शोध दक्षता में सुधार करने के लिए, पुस्तकालयों को प्रभावी साहित्य खोज, सूचना का आलोचनात्मक मूल्यांकन, डेटा संगठन और चिकित्सा अनुसंधान के लिए विशिष्ट समय प्रबंधन रणनीतियों पर नियमित, अनुरूप कार्यशालाएँ आयोजित करनी चाहिए। विशेष रूप से व्यक्तिगत स्वास्थ्य डेटा से संबंधित नैतिक डेटा और शोध के जिम्मेदार आचरण पर भी जोर दिया जाना चाहिए।

पुस्तकालयों के सामने आने वाली वित्तीय बाधाओं को दूर करने के लिए संस्थागत और सरकारी सहायता में वृद्धि महत्वपूर्ण है। मांग के प्रयासों को पुस्तकालय निवेश और बढ़े हुए शोध परिणाम, रोगी देखभाल में सुधार और क्षेत्रीय स्वास्थ्य सेवा विकास के बीच सीधे संबंध को उजागर करना चाहिए। अनुसंधान उद्देश्यों के लिए विभिन्न प्रकार के स्वास्थ्य डेटा तक आसान और नैतिक पहुँच की सुविधा के लिए नीतियों की भी समीक्षा की जानी चाहिए।

रायपुर संभाग में चिकित्सा महाविद्यालय पुस्तकालयों के बीच एक औपचारिक नेटवर्क या संघ स्थापित करने से संसाधन साझाकरण (जैसे, मजबूत अंतर–पुस्तकालय ऋण प्रणालियों के माध्यम से), संयुक्त प्रशिक्षण पहल और प्रौद्योगिकी अपनाने और संसाधन स्थिरता जैसी आम चुनौतियों के लिए सामूहिक समस्या–समाधान की सुविधा मिल सकती है। यह सहयोगात्मक दृष्टिकोण मौजूदा शक्तियों का लाभ उठाएगा और पूरे क्षेत्र में कमजोरियों को अधिक प्रभावी ढंग से संबोधित करेगा।

इन सुझावों को लागू करके, रायपुर संभाग के चिकित्सा महाविद्यालय पुस्तकालय अपनी अपरिहार्य भूमिका को और मजबूत कर सकते हैं, मौजूदा चुनौतियों पर काबू पा सकते हैं, तथा एक जीवंत और उत्पादक चिकित्सा शोध वातावरण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं, जिससे अंततः क्षेत्र के लिए बेहतर स्वास्थ्य देखभाल परिणाम सामने आ सकेंगे।

संदर्भ स्त्रोत–

[1] https://www.mlanet.org/public-policy-center/protecting-access-to-health-information/
[2] https://www.researchgate.net/publication/389971739_Exploring_the_Role_of_the_National_Medical_Library_in_Facilitating_Access_to_E-Resources_for_Medical_Professionals
[3] https://zenodo.org/records/10702455/files/IJRAMT_V5_I2_8.pdf?download=1
[4] https://www.copyright.com/blog/9-popular-search-tools-medical-scientific-research/
[5] https://jefflibraries.libguides.com/systematicreviews/data
[6] https://browse.welch.jhmi.edu/EBM
[7] https://guides.lib.uw.edu/hsl/ebp
[8] https://www.scirp.org/journal/paperinformation?paperid=61483
[9] https://www.researchprotocols.org/2025/1/e66127
[10] https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov/articles/PMC4954630/
[11] https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov/articles/PMC3543128/
[12] https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov/articles/PMC314101/
[13] https://digitalcommons.unl.edu/cgi/viewcontent.cgi?article=15922&context=libphilprac
[14] https://www.researchgate.net/publication/5917676_Health_Information-Seeking_Behavior
[15] https://raipur.gov.in/en/about-district/
[16] https://raipur.gov.in/en/districts-of-the-state/
[17] https://www.neetugguidance.in/state-institute.php?coldesc_id=8
[18] https://ptjnmcraipur.in/
[19] https://en.wikipedia.org/wiki/Category:Medical_colleges_in_Chhattisgarh
[20] https://www.aiimsraipur.edu.in/index.php
[21] https://bodmaseducation.com/government-medical-college-mahasamund
[22] https://en.wikipedia.org/wiki/Government_Medical_College,_Mahasamund
[23] https://www.gmcmahasamund.edu.in/
[24] https://en.wikipedia.org/wiki/Raipur_Institute_of_Medical_Sciences
[25] https://ccmgmcdurg.ac.in/facility_library.html
[26] https://www.ssmv.ac.in/Library
[27] https://www.ssimsb.ac.in/
[28] https://www.aiimsraipur.edu.in/user/central-library.php
[29] https://website.aiimsraipur.edu.in/Clibaiims.aspx
[30] https://www.shiksha.com/college/government-medical-college-mahasamund-207491/infrastructure

[31] http://www.gmkgclgmsmd.in/Facilities.aspx?pname=Library
[32] https://www.gmcmahasamund.edu.in/Facilities.html
[33] https://smcw.edu.in/library
[34] https://www.nitrr.ac.in/dept-cl.php
[35] https://aimslibrary.stacksdiscovery.com/research-support
[36] http://lib.jnu.ac.in/
[37] McKeown, S., & Ross-White, A. (2019). Building capacity for librarian support and addressing collaboration challenges by formalizing library systematic review services. *Journal of The Medical Library Association*, *107*(3), 411–419. https://doi.org/10.5195/JMLA.2019.443
[38] Lessick, S., Perryman, C., Billman, B. L., Alpi, K. M., De Groote, S. L., & Babin, T. D. (2016). Research engagement of health sciences librarians: a survey of research-related activities and attitudes. *Journal of The Medical Library Association*, *104*(2), 166–173. https://doi.org/10.3163/1536-5050.104.2.015
[39] Ragon, B. (2019). Alignment of library services with the research lifecycle. *Journal of The Medical Library Association*, *107*(3), 384–393. https://doi.org/10.5195/JMLA.2019.595
[40] *Hospital library information services for scientific research decision support*. https://doi.org/10.61784/wjit231283